चतुर्थ अध्याय
नीरज की ग़ज़लों की विषयवस्तु

चतुर्थ अध्याय
नीरज की ग़ज़लों की विषयवस्तु

प्रास्ताविक -

कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में जिन विषयों को प्रस्तुत किया है, उनको सोदाहरण स्पष्ट करना इस अध्याय का प्रमुख कार्य माना जाएगा। इसमें कवि ने प्रधान रूप से प्रयोग में लाए विषयों को प्रकाश में लाना चाहा हैं। जो विषय हैं - सामाजिक चेतना, बेकारी, मानवतावादी विचारधारा, धोखाधड़ी, मृत्युदर्शन, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि और राष्ट्रीय भावना। इसके साथ ही प्रेमाभिव्यक्ति का चित्रण भी आवश्यक माना जाएगा क्योंकि प्रेम के बिना संसार सूना - सूना लगता है। कवि ने अपनी ग़ज़लों के द्वारा लोगों का मनोरंजन किया है, साथ ही समाज में जागृती लाना, एकता का संदेश देना, यथार्थवादी चित्रण करना, अपनी वेदना को बयान करना और आम आदमी के जीवन को सबके सामने प्रस्तुत करना अपना परमकर्तव्य माना है।

4.1 नीरज की ग़ज़लों की विषयवस्तु

4.1.1 सामाजिक चेतना :-

जीवन की कगार पर खड़े होने के बाद समाज में होनेवाली सारी अच्छाईयाँ और बुराईयाँ दिखाई देती हैं। ऐसे समय में बुराइयों से समाज को सावधान करना, और इनमें सुधार लाना आवश्यक बात है। कवि नीरज जी ने समाज में छिपी बुराइयों पर कड़ा व्यंग कसा है। साथ ही समाज को सही रास्ता दिखाने का प्रयास किया है। आजकल समाज में भ्रष्टाचार, मारपीट, संस्कारहिनता, धोखाधडी जैसी समस्याएँ पनप रही हैं। उनको दृष्टिगोचर करना ही कवि को सामाजिक चेतना का आभास दिलाता है। अब तक विश्व में जिनकी भी वैचारिक क्रांतियाँ हुई हैं, उनका प्रमुख कारण सामाजिक चेतना ही रहा है।
कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में बताया है कि -

"जागते रहिए ज़माने को जगाते रहिये,
मेरी आवाज़ में आवाज़ मिलाते रहिये।
हगने कल राज जलाये थे जो चौपालों पर
उन अलावों की ज़रा राख हटाते रहिये।
नींद आती है तो तक़दीर भी सो जाती है
कोई अब सो न सके गीत वो गाते रहिये।
भूखा सोने को भी तैयार है ये देश मेरा
आप परियों के उसे ख़्वाब दिखाते रहिये।
वक़्त के हाथ में पत्थर भी है और फूल भी हैं
चाह फूलों की है तो चाह भी खाते रहिये।
जाने कब आख़िरी ख़त आपके नाम आ जाये
आपसे जितना बने प्यार लुटाते रहिये।" [1]

इस ग़ज़ल में कवि नीरज जी ने बताया है कि, अच्छाई को पहचानिये और अपना विकास किजिए। साथ ही जमाने को भी अपने साथ लेकर चलिए। अँधेरे जैसी बुराईपर विजय पाने के लिए जो ज्योति जलाई है, उसपर बूरे विचारों की राख को टिकने न दिजिए। जनता को जागृत होने में वक्त लगता है। अब लाख प्रयासों से जगाई जनता को सोने न दिजिए अन्यथा विकास केवल सपना बनकर रह जाएगा। हमारे देश की जनता को भूखे सोने में भी तकलीफ न होगी मगर उन्हें कल के उज्ज्वल भविष्य के प्रति जागृत करना जरूरी है। वक्त के साथ सुख - दुख आते रहतें हैं। अगर सुख को पाने की चाहत है, तो दुख को भी अपने गले से लगाना जरूरी है। मृत्यु के बारे में कुछ भी कहना आसान नहीं, क्योंकि उसका समय निश्चित नहीं है। इसलिए अपने जीवन में जितना हो सके, दूसरों पर प्यार बरसाते रहिये।

"जो जुल्म सह के भी चुप रह गया, न खौल उठा
वो और कुछ हो मगर आदमी का रक्त न था।
उन्हीं फकीरों ने बदली है वक़्त की धारा
कि जिनके पास खुद अपने लिए भी वक़्त न था।
शराब करके पिया उसने ज़हर जीवन - भर
हमारे शहर में नीरज - सा कोई मस्त न था।" [2]

कवि ने बताया है कि, अत्याचार को सहना इन्सान के स्वभाव के विरूद्ध है। अतः अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठानी चाहिए। जो जुल्म सहकर चुप रहेगा, उसे इन्सान कहना उचित नहीं है। वक़्त की धारा को बदलने का सामर्थ्य विद्वान और महात्मा व्यक्तियों में रहता है। और दूसरों के हित के लिए जीनेवाले व्यक्ति ही महात्मा बनते हैं। नीरज जी अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जो जीवनभर दुख, दर्दभरे जीवन से लडते रहें और दूसरों को जीने की प्रेरणा देते रहें।

"मैं मानता था जिसे एक प्यार का मन्दिर
वहाँ जो देखा तो नफ़रत का कारख़ाना था।
खुद अपना बाग़ जलाने चले थे जब भौंरे
तो एक तितली को पूरा चमन बचाना था।
न मन्दिरों में न मस्जिद में जब मिला तू मुझे
उधर गया मैं जिधर को शराबख़ाना था।" [3]

इस ग़ज़ल का कथ्य यह है कि, मानव की पहचान है दया, क्षमा, शांति और प्यार। कवि को लगता था कि, मानव जहाँ भी रहता होगा, वहाँ प्यार ही प्यार देखने को मिलेगा। मगर आजकल मनुष्य इतना बदल चुका है कि, वह आपस में नफ़रत बढाने लगा है। अपने समाज की रक्षा करने के बजाय, उसे समाप्त करने के विचारों को बढ़ावा दे रहा है। ऐसे में शोषकों से समाज को बचाना आम आदमी का कर्तव्य है। ईश्वर का अस्तित्व न मंदिर में है न मस्जिद में, उसका अस्तित्व तो मानव के ह्रदय में है। यह बात समझने पर कवि ईश्वर को ढुँढने मानव के पास चला जाता है, जो व्यसनाधिनता का शिकार बन चुका है।

इसप्रकार कवि नीरज जी ने समाज की बुराईयों को चित्रित किया है, जो सामाजिक चेतना का प्रतिक माना जाएगा।

4.1.2 बेकारी :-

जनसंख्या बढ़ने के कारण जरूरतें बढ़ती गई और नौकरीयाँ न मिलने के कारण बेकारी बढ़ती गई, यह बातें प्रचार सभा में ही अच्छी लगती हैं। क्योंकि झूठे आँसुओं के कतरे दिखाकर वोटों के बँक उन्हें इकट्ठा करने होते हैं। मगर जो लोग बेकारी का शिकार हो चुके हैं, वो ही जानते हैं कि, पेट की आग के आगे न अच्छाई चलती है न बुराई। उसके आगे चलती है तो सिर्फ रोटी। ऐसे में अच्छे विचारों और नेकी के रास्तेपर चलना मुमकिन नहीं होता। इसीकारण बेकारी से लाचार लोग बूराई के रास्ते पर चल पड़ते है। जिसमें न उनका दोष है और न ही विचारों का। दोष होता है पापी पेट का।
यह बात कवि नीरज जी की ग़ज़लों में स्पष्ट दिखाई देती है -

"आदमी खुद को कभी यूँ भी सज़ा देता है
रोशनी के लिए शोलों को हवा देता है।
ख़ून के दाग़ हैं दामन प' जहाँ सन्तों के
तू वहाँ कौन से 'नानक' को सदा देता है।
एक ऐसा भी वो तीरथ है मेरी धरती पर
क़ातिलों को जहाँ मन्दिर भी दुआ देता है।
मुझको उस वैद्य की विद्या प' तरस आता है
भूखे लोगों को जो सेहत की दवा देता है।
चील-कौओं की अदालत में है मुजरिम कोयल
देखिये वक़्त ये अब फैसला क्या देता है।
तू खड़ा हो के कहाँ माँग रहा है रोटी
ये सियासत का नगर सिर्फ़ दग़ा देता है।" [4]

प्रस्तुत ग़ज़ल का आशय यह है कि, अच्छे विचारों के साथ नेकी के रास्ते पर चलने वाले लोगों को भी कभी - कभी हालात के हाथों मजबूर होकर गलत काम करने पडते हैं। और गुनहगार व्यक्ति सरे आम घूमते रहते हैं तथा ऐसे मजबूर व्यक्तियों को जेल में सजा काटनी पडती है। ऐसे मजबूर व्यक्तियों को ईश्वर सजा नहीं देता क्योंकि इसमें उनका कुसुर नहीं होता। जब भूखे पेट रहने पर आम आदमी बीमार पड़ता है और डॉक्टर उसे सेहत की दवा देता है, तब कवि को डॉक्टर की बुद्धी पर तरस आता है। क्योंकि जिसे रोटी खाने के लिए पैसे नहीं मिलते वो दवा कैसे खरिदेगा ? गैरकानूनी कामकाज, गुनहगारी आदि को चलानेवाले लोग हमारे समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं, नेता होते हैं, जिन्हें कभी सजा नहीं होती। सजा दी जाती है तो सिर्फ गरिबी, बेकारी से लड़कर जीनेवाले इन्सान को। अगर वह व्यक्ति नौकरी माँगता है, तो उसे नौकरी नही मिलती। बल्कि बूरे काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। ताकी जरूरत पडनेपर उसे दगा देकर सजा काटनेपर मजबूर किया जाए। यही सच्चाई है बेकारी में जिनेवाले आम

इन्सान के जीवन की।

"निर्धन लोगों की बस्ती में घर-घर कल ये चर्चा था
वो सबसे धनवान था जिसकी जेब में खोटा सिक्का था।
अपने शहर में उस दिन मैंने भूख का ये आलम देखा
दूध के बदले इक माँ के आँचल से खून टपकता था।
खेत जले, खलिहान जले, सब पेड़ जले, सब पात जले
मेरे गाँव में रात न जाने कैसा पानी बरसा था।
अपने देश की हालत मुझको बिल्कुल वैसी दिखती है
जैसे बाज़ के पंजे में इक गौरैया का बच्चा था।
सारी महफ़िल सुनकर जिसको झूम-झूमकर मस्त हुई
वो तो गीत नहीं था मेरा, आँसू का इक क़तरा था।" [5]

बेकारी को व्यक्त करनेवाली ग़ज़ल में कवि बताते हैं कि, बेकारी का सामना करनेवाले व्यक्तियों के घरों में हर वक्त यही विषय रहता है कि, बूरे काम करनेवाले व्यक्ति ही अच्छा पैसा कमाते है और कामयाब बन जाते हैं। अतः उनके दिलों - दिमागपर बूरे काम छा जातें हैं। पेट की भूख मिटाने के लिए रोटी न मिलने के कारण जब माँ अपने बच्चे को दूध नहीं पिला पाती तब इस संसार की कल्पना मिथ्या लगने लगती है। कुदरत ऐसे हालात में उग्र रूप धारण करती है, जिससे कोई भी बच नहीं पाता। कवि को अपने देश की हालत बाज़ के पंजे में जकडे गौरैया के बच्चे की तरह लगती है। जिसका अस्तित्व खतरे में है। यह बाज़ बेकारी का प्रतीक है और गौरैया का बच्चा बेकारी से पीड़ीत व्यक्ति का। कवि नीरज जी बताते है कि, जिस गीत को सुनकर सारी महफ़िल झूम उठी थी, वह गीत न होकर बेकारी से पीड़ीत व्यक्ति की जीवन गाथा थी। जिसे केवल सुनना ही आज के समाज का काम है। क्योंकि बदलाव लाने की ताकत उनमें नहीं है।

इसप्रकार कवि ने बेकारी का चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है।

4.1.3 मानवतावादी विचारधारा :-

इन्सान इन्सान के साथ इन्सानियत से पेश आए, इसीको मानवतावाद कहते हैं। और मानवतावाद के बारे में होनेवाले हमारे विचार ही मानवतावादी विचारधारा बन जाते हैं। मानवतावाद के बारे में डॉ. दुर्गा शंकर मिश्रजी के विचार इसप्रकार हैं - " सामान्यतया मानव गरिमा एवं महत्ता की घोषणा करनेवाली विचार सरणि को 'मानवतावाद' कहा जाता है और श्री वाल्टर लिपमान (Walter Lippmonn) ने एक स्थानपर मानवतावाद का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए यही कहा है कि मानवता से अभिप्राय मनुष्य द्वारा इस धरतीपर मानव की बुद्धि, उसके विवेक एवं श्रम द्वारा उत्तम जीवन की खोज की इच्छा अथवा दृढ़ संकल्प से हैं। " [6]

"समय ने जब भी अँधेरों से दोस्ती की है,
जलाके अपना ही घर, हमने रोशनी की है।
सुबुत हैं मेरे घर में धुएँ के ये धब्बे,

कभी यहाँ प' उजालों ने ख़ुदकुशी की है।
कभी भी वक्त ने उनको नहीं मुआफ़ किया
जिन्होंने दुखियों के अश्कों से दिल्लगी की है।
जली हैं आग में जब - जब भी शहर की सड़कें
मेरे ही पाँव के छालों ने कुछ नमी की है।" [7]

दूसरों के गमों में शरिक होकर सुख - दुख में साथी बनना ही मानवतावाद है। कवि ने अपने जीवन के प्रसंगों द्वारा इसीके कुछ उदाहरण हमारे सामने रखे हैं। जब भी किसी अपने पर बूरे हालात हावी हो जाते थें, तब कवि अपना सबकुछ दाँव पर लगाकर उसकी मदद के लिए आ जाते थें। इसके सबूत हैं कवि के जीवन के वह लमहें, जो अब भी अपनी याद ताजा करने में माहिर हैं। अपना असुरक्षित अस्तित्व दिखाने में सक्षम हैं। जो लोग दूसरों को दुख देने में आनंद पाते हैं, उन्हें समय कभी भी माफ नहीं करता और इसका फल उन्हें अवश्य भुगतना पड़ता है। समाज में बढ़ता दुख - दर्द और उसपर आवश्यक हल निकालने का प्रयास कवि हमेशा करता रहा है। यही कारण है कि, नीरज जी के अपने पन ने लोगों को सम्हलकर रखा है।

"ग़रीब क्यों न रहे देश की सारी बस्ती
हैं क़ैद खुशियाँ सभी एक ही घराने में।
न आग फेंको मेरे मुस्कराते फूलों पर
मिलेगी ऐसी न खुशबु किसी ख़जाने में।
जो रोते दिल को हँसाने में इबादत होती
बड़ी है उससे इबादत कहाँ ज़माने में।
गिरी हैं बिजलियाँ कुछ ऐसी चमन पर अपने
कि अब तो बच्चे भी डरते हैं मुस्कराने में।" [8]

इस ग़ज़ल में बताया गया है कि, धन और सत्ता का एक ही घराने में केंद्रिकरन होने के कारण वही अमीर बनते जा रहे हैं और आम जनता गरीब की गरीब ही रह गयी है। आज के युवक कल के नागरिक हैं। वही हमारे देश का भविष्य है। अगर अच्छाई से वह बहक जाते हैं तो देश का भविष्य अंधःकारमय हो जाएगा। अतः उन्हे सम्हलकर सही रास्ते पर लाना ही देश के लिए और समाज के लिए हितकारक होगा। क्योंकि आगे चलकर यही युवक देश को संपन्न और यशस्वी बनायेंगे। अगर किसी दुखी व्यक्ति को हम सुख दे पाते हैं, तो हमसा खुशनसिब कोई और न होगा। क्योंकि दूसरे को सुख देने में जो आनंद और सुख प्राप्त होता है, वह सब सुखों से बढ़कर है। हमारे देश के हालात इतने खराब चल रहें हैं कि, बार-बार दहशतवाद, युद्ध, दंगे - फसाद होने लगे हैं। इससे नयी पीढ़ी घबरा गई है। युवक बौंखला गये हैं। उन्हें संभालना आवश्यक है। अन्यथा भविष्य के संकेत ठिक नहीं होंगे।

इसप्रकार कवि ने अपनी ग़ज़लों में मानवतावादी विचारधारा को समाज के सम्मुख रखा है।

4.1.4 धोखाधड़ी -

अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को फँसाना, लूटना ही धोखाधड़ी है। आज कल धोखाधाडी की मात्रा इतनी बढ़ चुकी है कि, अपना कौन है और पराया कौन ? यह बताना भी मुश्किल हो रहा है। जब अपने खून के रिश्ते ही धोखा देने लगे हैं, तो पराये लोगों से शिकायत करना गँवारा नहीं होता। आज ऐसी स्थिति आ गई है कि, जो दिखता है वो होता नहीं और जो होता है वो दिखत नहीं। इसीकारण उपरी सजावट पर मोहित होकर लोग फँस जाते हैं। कोई शराफत की आड में बूरा आचरण करता है, तो कोई देशभक्ती की आड में देशद्रोही बनता है। इसी का चित्रण कवि ने अपनी ग़ज़लों मे किया है।

"बदन प' जिसके शराफत का पैरहन देखा
वो आदमी भी यहाँ हमने बदचलन देखा।
ज़ुबाँ है और, बयाँ और, उसका मतलब और
अजीब आज की दुनिया का व्याकरण देखा।
लुटेरे डाकू भी अपने प' नाज़ करने लगे
उन्होंने आज जो संतों का आचरण देखा।" [9]

इस ग़ज़ल का आशय यह है कि, जैसा दिखता है वैसा होता नहीं और जैसा होता है वैसा दिखता नहीं। समाज में जो लोग शराफत का ढोंग रचाते हैं, उनके पास शराफत का अकाल पड़ा रहता है। उनकी कथनी और करनी में अंतर होता है। जो लोग अपने आप को महान, आदर्श बताते हैं, वो लोग ही घट़ीया किस्म के होते हैं। उनकी सोच भी बहुत छोटी होती है।

"जब भी इस शहर में कमरे से मैं बाहर निकला
मेरे स्वागत को हरेक जेब से खंजर निकला।
तितलियों - फूलों का लगता था जहाँ पर मेला
प्यार का गाँव वो बारूद का दफ़्तर निकला।
मेरे होंठो प' दुआ उसकी ज़ुबाँ पर गाली
जिसके अन्दर जो छुपा था वही बाहर निकला।" [10]

कवि जब भी घुमने के लिए घर से बाहर निकलते थे, तब उनको मिलनेवाले सभी व्यक्ति उनसे जलते - कुढ़ते थे। उनकी बुराई चाहते थे। यह समाज पहले आदर्श हुआ करता था, मगर अब बुराई रूपी बारूद का दफ़्तर बन चुका है। जो दूसरों को सुखी नहीं देख सकता। हम दूसरों की अच्छाई चाहते हैं और वे हमारी बुराई, क्योंकि जिसके अंदर जो विचार हैं वही बाहर आते हैं।

"घृणा का प्रेम से जिस दिन अलंकरण होगा
धरा प' स्वर्ग का उस रोज़ अवतरण होगा।
न तो हवा की है ग़लती न दोष नाविक का
जो लेके डुबा तुझे तेरा आचरण होगा।

हाँ आत्मघात ही करना पड़ेगा सूरज को
इसी तरह जो उजालों का अपहरण होगा।''[11]

अपने स्वार्थ में डुब जाने के कारण लोग प्यार को भूलते जा रहे हैं और घृणा को अपना रहे हैं। अगर समाज को सुखी और संपन्न बनाना है तो प्यार से सभी को जितना आवश्यक है। न की घृणा से परस्पर संबंधों को बिगाडना। अगर हमें कहींपर क्षति पहुँचती है, हमारा नुकसान होता है, तो हम दूसरों को उसका जिम्मेदार ठहराते हैं। मगर अपने नुकसान की जिम्मेदारी खुद हमारे उपर रहती है। क्योंकि हमारे आचरण के अनुसार ही हमें फल मिलता है। आज कल दिन दहाडे अन्याय, अत्याचार हो रहे हैं। बुराई अच्छाईपर हावी हो रही है। इसे रोकना जरूरीं हो गया है। अन्यथा समाज का और मानव जाति का विनाश निश्चित है।

''जिधर की सिम्त मेरे दोस्तों की बैठक थी,
उसी तरफ से मेरे सेहन में पत्थर आये।
दिलों को तोड़ के मन्दिर जो बनाकर लौटे,
उन्हें बताओ कि वह क्या गुनाह कर आये।''[12]

जिन्हें हम अपना समझते हैं, जिनपर हम विश्वास रखते हैं, उन्हीं से हमें धोखा मिल जाता है। यह स्वार्थ के पनपने का नतीजा है। साथ ही,लोग मजहब क़े नाम पर झगड़ते है यह बूरी बात है। क्योंकि कोई भी मजहब झगड़ा नही चाहता बल्कि अमन चाहता है। यही हमें समझना चाहिए। और आपस में प्रेमपूर्वक संबंध बनाने चाहिए।

इस प्रकार कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में धोखाधड़ी का चित्रण किया है।

4.1.5 मृत्युदर्शन -

जीवन नश्वर है, मृत्यु अटल है,फिर भी मानव जिने की इच्छा रखता है। संसार की मोहमाया में फँस जाता है। कवि नीरज जी ने मृत्यु का यथार्थ चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है। मृत्यु की भयानकता को स्विकार करना आवश्यक है क्योंकि वह एक निश्चित, अचल सत्य है। मृत्युदर्शन को अब कवि के लफ्जों में देखना ही अधिक लाभदायक सिद्‌ध होगा।

''कुल शहर बदहवास है इस तेज़ धूप में
हर शख़्स जिन्दा लाश है इस तेज धूप में।''[13]

जीवन में आनेवाली परेशानीयाँ मृत्यु से कम नहीं होती, यह बात इस ग़ज़ल से स्पष्ट होती है। क्योंकि शहर के बदलते हालात परेशानीयाँ बढ़ा रहे है। उन तकलिफों से हम मृत्यु की पीड़ा को भी अनुभव करते हैं। कई बार ऐसा भी लगने लगता है कि, मृत्यु अत्यंत सुंदर है जो हमें जीवन के झंझट से आजाद करने आती है।

"दिखते हैं सबसे पीछे यहाँ आज वो ही लोग
मरने के दिन जो मौत से आगे निकल गये।" [14]

मृत्यु का यथार्थ चित्रण करते हुए कवि ने यहाँ बताया है कि,जिन लोगों को हम काफी पिछे छोडकर तरक्की के रास्ते पर आगे निकल जाते हैं,वो लोग जीवन के सफर में हम से भी आगे निकल जाते हैं। अर्थात मृत्यु को अपना लेते है, उसे स्विकार करते हैं। यही जीवन का शाश्वत सत्य है।

"सफर ये साँस का अब ख़त्म होनेवाला है
जो जागता था मुसाफिर वो सोनेवाला है।
दुखी सभी हैं यहाँ अपने - अपने सुख के लिए
तेरे लिए तो न कोई भी रोनेवाला है।
हज़ारों लोग इधर से गुज़र गये फिर भी
ये सिलसिला न कभी ख़त्म होने वाला है।" [15]

इस ग़ज़ल में कवि ने मृत्यु के सफर का चित्रण किया है। कवि कहता है कि,जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित होती है। हमारा जीवन केवल शतरंज का खेल है, जिसमें कब, कहाँ, क्या होगा बताना मुश्किल है। हम संसार के मोहजाल में फँस जाते है और यह मेरा है, वह मेरा है ऐसा कहते रहते हैं। मगर सच्चाई यह है कि, कोई किसीका नहीं होता। इन्सान अकेला जन्म लेता है और अकेला ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। हर किसी को अपना सुख प्यारा होता है। दूसरों की परवाह करना उसे रास नहीं आता। जीवन के सफर में हर रोज न जाने कितने लोग जन्म लेते हैं और कितने मृत्यु को प्राप्त हो जाते है ? मगर जीवन का यह चक्र हमेशा चलता ही रहता है।

इसप्रकार नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में मृत्यु का चित्रण एक शाश्वत सत्य के रूप में किया है। यही मानव जीवन का अंतिम सत्य है, जिसे स्विकार करना ही पड़ेगा।

4.1.6 व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि :-

जीवन आरंभ होता है अपने लिए और खत्म भी होता है तो अपने ही लिए। अगर जीवन का सफर इसतरह से चलता है तो काव्य के विषय में भी उसका अपना महत्व रहना चाहिए। इसीलिए व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि अपना अलग महत्व रखती है। इसके बारे में विद्वानों के विचार भी महत्वपूर्ण हैं - " कवि नीरज ने अपनी काव्य कृतियों में व्यक्ति की महत्ता का ही प्रतिपादन किया पर साथ ही साथ वैयक्तिक कविता या व्यक्तिवादी काव्यधारा की उक्त प्रवृत्तियों में से अधिकांश न्यूनाधिक रूप में नीरज के काव्य में अवश्य दृष्टिगोचर होती हैं। सत्य तो यह है कि नीरज के काव्य का आरंभ वैयक्तिक जीवन की अनुभूतियों के प्रकाशन के साथ आरम्भ होता है और उनकी प्रथम कृति संघर्ष या नदी किनारे में ही प्रेम, विरह, आशा, निराशा, असंतोष एवं विद्रोह आदि की अभिव्यक्ति के कई भावपूर्ण एवं सरस चित्र दीख पड़ते हैं। " [16]

"मैंने खुशबू - सा बसाया था जिसे तन - मन से
मेरे पहलू में वही बैठा हैं खंजर की तरह।
मेरा दिल झील के पानी की तरह काँपा था
तुमने वो बात उछाली थी जो कंकर की तरह।
तुझसी शोहरत न किसी को भी मिले ऐ 'नीरज'
फूल भी फेंके गये तुझ पै' तो पत्थर की तरह।" [17]

इस ग़ज़ल में कवि ने जीवन के दुखभरे अंग को हमारे सामने रखा है। कवि कहते हैं कि, जिसे हम अपना समझते हैं, जिसके लिए अपना सारा जीवन दाँव पर लगाते हैं, वही व्यक्ति जब हमें चोट देती है तो जीवन निरस लगने लगता है। कवि का मानना है कि, जिस तरह का बरताव उनके साथ किया गया, वैसा किसी दुश्मन के साथ भी न किया जाए।

"जब चले जाएँगे हम लौटके सावन की तरह,
याद आएँगे प्रथम प्यार के चुम्बन की तरह।
जिक्र जिस दम भी छिड़ा उनकी गली में मेरा
जाने शरमाए वो क्यों गाँव की दुलहन की तरह।
मेरे घर कोई खुशी आती तो कैसे आती ?
उम्र - भर साथ रहा दर्द महाजन की तरह।" [18]

प्रस्तुत ग़ज़ल का आशय यह है कि, इन्सान की किमत उसके जाने के बाद ही पता चलती है। और हम उसे याद करके पछतावा करते हैं। हर व्यक्ति किसी न किसी से प्यार करती है, पर उसे छुपाती है। लेकिन कभी न कभी तो यह बात सामने आ जाती ही है। कवि के जीवन में दुख हमेशा दोस्त की तरह साथ निभाता रहा। इसीकारण उनके जीवन में खुशी के आने का कोई मौका नही था। फिर भी कवि ने अपना जीवन सफल बनाकर दूसरों को सही राहपर चलना सिखाया।

"हर शख्स उनकी आँख में सोना बना रहा
मैं ही था इक जो सिर्फ खिलौना बना रहा।
बढ़ता रोज जिस्म मगर घट रही थी उम्र
'होने' के साथ-साथ 'न होना' बना रहा।
रेशम की सेज के लिए जब गीत बिके थे
मिट्टी की पलंग अपना बिछौना बना रहा।
इंसानियत के गज़ से जब नापा गया जनाब
जिसका बड़ा था क़द वही बौना बना रहा।" [19]

तिरस्कार और विडंबना से पीड़ित जीवन का चित्रण करते हुए कवि ने बताया है कि, सभी को इज्जत के साथ अपनाया गया, मगर मैं ही केवल तिरस्कार और उपहास के लिए चुना गया। उम्र तो जीवन का लिहाज कर के बढ़ती गई परंतु मेरा अस्तित्व तो अपने आप में ही खोया रहा। समय के साथ हालात बदल जाते हैं मगर मेरे हालात में कभी परिवर्तन न आया। इन्सानियत की बात जब छेडी गयी,

तब नीरज का नाम बुलंदीयों पर पाया गया। मगर जीवन तो अकेले और पिड़ित अवस्था में ही जिया गया।

इसप्रकार कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि का चित्रण किया है।

4.1.7 राष्ट्रीय भावना :-

अपने राष्ट्र के प्रति होनेवाली जिम्मेदारी, प्यार, अपनापन जब दिलों दिमागपर छा जाता है, तब उत्पन्न होनेवाली भावना या विचार श्रेणी को राष्ट्रीय भावना कहते हैं। राष्ट्रीय भावना के बारे में विविध विद्वानों के मत इसप्रकार हैं - " गिलक्राइस्ट ने अपने Principal of Political Science नामक ग्रंथ में कहा है, 'राष्ट्रीयता एक ऐसी आंतरिक भावना है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है जो एक ही जाति और स्थान से सम्बन्ध रखते हों जिनकी भाषा, धर्म, इतिहास एवं आचार विचार सामान्य हों और एक ही राजनैतिक आदर्श से संगठित हों।' साथ ही प्रो.होल कोम्बे ने - Foundation of modern common welth नामक ग्रंथ में राष्ट्रीयता की परिभाषा देते हुए कहा है कि राष्ट्रीयता एक सामूहिक भाव है, एक प्रकार की साहचर्य भावना है या पारस्पारिक सहानुभूति है जो एक स्वदेश विशेष से संबंधित होती है, उसका उद्‌भव सामान्य पैतृक स्मृतियों से होता है, चाहे वे महान कर्तव्य और गौरव की हों अथवा विपत्ति तथा कष्टों की। " [20]

"अब तो इक ऐसा वरक़ मेरा - तेरा ईमान हो
इक तरफ़ गीता हो जिसमें इक तरफ़ क़ुरआन हो।
काश ऐसी भी मोहब्बत हो कभी इस देश में
मेरे घर उपवास हो जब तेरे घर रमजान हो।
मज़हबी झगड़े ये अपने आप सब मिट जायेंगे
और कुछ होकर न गर इन्सान बस इन्सान हो।
कृष्ण की वंशी का आशिक तू भी हो जाएगा दोस्त
बज़्म में तेरी अगर शामिल कोई रसखान हो।
अपना ये हिन्दोस्ताँ होगा तभी हिन्दोस्ताँ
हाथ में हिन्दी के उर्दू का कोई दीवन हो।" [21]

इस ग़ज़ल के माध्यम से कवि नीरज जी ने हिन्दु - मुस्लिम एकता का संदेश दिया है। एक - दूसरे के रस्मों - रिवाज को आदर, इज्जत देने की सलाह दी है। मजहबी झगडें भूलकर आपस में प्यार की भावना जगाने की सलाह दी है। साथ ही हिंदोस्तान की भलाई के लिए एकता का महत्व प्रतिपादित किया है। इसप्रकार इस ग़ज़ल में राष्ट्रीय भावना का चित्रण किया गया है।

"अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाये।
जिसकी ख़ुशबु से महक जाये पडोसी का भी घर

फूल इस क़िस्म का हर सिम्त खिलाया जाये।
आग बहती है यहाँ गंगा में झेलम में भी
कोई बतलाये कहाँ जाके नहाया जाये।
मेरे दुख - दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं रहूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाये।
जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये।'' [22]

प्रस्तुत ग़ज़ल में कवि नीरज जी ने राष्ट्रीय भावना के विविध पहलूओं को उजागर किया है। वह चाहते हैं कि, इन्सानियत का मजहब होना चाहिए, जिसमें केवल प्यार ही प्यार भरा हो। नफरत के लिए उसमें जगह न हो। दूसरों की भलाई सोचना और सुख - दुख में साथ निभाना हर व्यक्ति अपना कर्तव्य समझें। सारे दंगे - फसादों की जड़ों को नष्ट करके एकता का नया इतिहास बनाया जाए। और हर व्यक्ति एक - दूसरे का दर्द महसूस कर सके।

''जिसमें मज़हब के हर इक रोग का लिक्खा है इलाज
वो किताब हमने किसी रिन्द के घर देखी है।
ख़दकुशी करती है आपस की सियासत कैसे
हमने ये फ़िल्म नई खूब इधर देखी है।
दोस्तों ! नाव को अब खूब सँभाले रखियो।
हमने नज़दीक ही इक ख़ास भँवर देखी है।
जो उठाती थी न सर अपने बड़ों के आगे
हमने तहज़ीब वो अब तो न इधर देखी है।
तुम समझ जाओगे क्या चीज़ है भारतमाता
तुमने बेटी किसी निर्धन की अगर देखी है।'' [23]

राष्ट्रीय भावना को प्रकट करनेवाली इस ग़ज़ल में कवि नीरज जी ने बताया है कि, बूरे आचरण वाले व्यक्ति मजहब के नामपर लोगों को आपस में लडाते हैं। और अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ऐसे लोगों से हमें सावधान रहना है क्योंकि इनके नापाक इरादे सियासत का जिना दुशवार कर देते हैं। ऐसे लोगों का अस्तित्व किसी भँवर से कम नहीं होता। हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है मगर आज की पीढ़ी अपने संस्कार भूल रही है, इस तरफ कवि इशारा करते हैं। साथ ही अपने देश की दरिद्री अवस्था का चित्रण करते हुए कवि ने भारतमाता को 'निर्धन की बेटी' की उपमा दी है।

इसप्रकार कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया है।

4.1.8 प्रेमाभिव्यक्ति :-

जीवन यापन करने के लिए रिश्ते जरूरी होते हैं और रिश्तों में प्यार होता है। अतः प्रेम यह जीवन की आवश्यक पूँजी है। प्रेम में भी संयोग पक्ष और वियोग पक्ष का चित्रण किया जाता है। संयोग पक्ष में सुखी जीवन का चित्रण होता है तो वियोग पक्ष में हृदयद्रावक वर्णन किया जाता है। विरह वर्णन दिल को छूने में कामयाब हो जाता है। प्रेम के बारे में कुछ विचारकों का यह मानना है कि - " नीरज के दर्शन का मूल स्वर है प्रेम और अन्य सभी स्वर उसी की वेदना, उसी की पीड़ा से निकले है। प्रेम एक मूलभूत अनश्वर तत्व है और जीवन में चारों ओर जो कुछ विस्तार और प्रसार है सब उसी का प्रति रूप हैं। प्रेम का प्रसार अनन्त है। धरती से आकाश तक जो सबको बांधे हुए है वह प्रेम अर्थात आकर्षण का ही सूत्र है। यही वह सूत्र है जिससे ग्रह - उपग्रह, बिजली और बादल एक लय में नर्तन करते हैं। " [24]

"है इश्क जिसका नाम वो इक ऐसी आग है
जो भी बुझाने आये इसे ख़ुद वो जल गये।" [25]

इस ग़ज़ल में कवि ने इश्क का जादू दिखाने का प्रयास किया है। कवि कहता है कि, इश्क न माननेवाले कई लोग होते है, जो प्यार करनेवालों का हमेशा मजाक उडाया करते है। मगर जब उन्हें इश्क हो जाता है, तब उनकी हालत सबसे खराब रहती है। क्योंकि उनके दिल का दर्द छिपाये नही छुपता।

"रंग ऋतु के बदल गये होंगे
वो जिधर से निकल गये होंगे
तुमसे होकर जुदा सभी आँसू
गीतों - ग़ज़लों में ढल गये होंगे।
वो नजर जिस तरफ़ उठी होगी
गिरने वाले सँभल गये होंगे।" [26]

प्रस्तुत ग़ज़ल के माध्यम से कवि ने अपने प्रिय व्यक्ति का महत्व बताने का प्रयास किया है। उनका मानना है कि, अपने प्रिय को सामने देखकर जो आनंद मिलता है, उसका वर्णन करना आसान नहीं। उस आनंद के सामने दुनिया की सारी खुशियाँ कुछ भी नहीं हैं। अपनी प्रियतमा से जुदा होने के बाद जो उनकी हालत हुई है, वह ग़ज़लों में देखने को मिलती है। ग़ज़लों में वर्णित दर्द उन्होंने खुद महसूस किया है। जिसप्रकार पानी के बाहर निकलनेपर मछली छटपटाती है, ठिक वही हालत प्रियतमा से दूर रहने पर प्रेमी की हो जाती है। प्यार की ताकत का महत्व बताते हुए कवि कहते हैं कि, जब तक हमारी प्रिय व्यक्ति हमारे साथ है, तब तक हम गलत काम नहीं कर सकते और जिंदगी में हमेशा कामयाब होते रहेंगे। यह सब उनकी चाहत और अपनेपन का नतीजा होता है।

"... कि दूर - दूर तलक एक भी दरख़्त न था,
तुम्हारे घर का सफ़र पहले इतना सख़्त न था।
हम इतने लीन थे तैयारियों में जाने की
वो सामने थे, उन्हें देखने का वक़्त न था।" [27]

कुछ हादसे ऐसे भी होते है कि, प्रेमीयों में तकरार हो जाती है। यह ग़ज़ल उसी का एक उदाहरण है। अपने किसी काम में प्रेमी इतना खोया था कि, प्रियतमा के लिए उसके पास वक्त न रहा। इससे प्रियतमा नाराज हुई और अपने घर चली गई। जब प्रेमी को इस बात का एहसास हुआ तो वह बहुत परेशान हुआ। क्योंकि रूठी प्रियतमा को मनाना कोई आसान काम नहीं है। इसीकारण अब प्रियतमा के घर का सफर प्रेमी को कठीण जान पड़ता है।

इस प्रकार कवि नीरज जी ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम के विविध अंगो का चित्रण किया है और अपनी दिलचस्प बातों से पाठकों का मन जित लिया है।

निष्कर्ष :-

कवि नीरज जी की ग़ज़लों का अध्ययन करने के बाद यह बात ध्यान में आ जाती है कि, उनकी ग़ज़लों में प्रेमवर्णन की अपेक्षा सामाजिक विषयों पर अधिक बल दिया गया है। आज की समस्याओं का चित्रण किया गया है और आम आदमी के वेदना की चित्कार को व्यक्त किया गया है। काव्य का उद्देश्य मनोरंजन तक सीमित न रखकर कवि ने उसे जागृति के लिए भी अपनाया है। आम आदमी का चित्रण होने के कारण तथा भावनाओं को व्यक्त करने की सही शैली के कारण नीरज जी की ग़ज़ले काफी मशहूर हुई है। प्रस्तुत अध्याय में उन ग़ज़लों में वर्णित विषयों को चर्चा में लाया गया है। जिसमें प्रमुख विषय रहे हैं - सामाजिक चेतना, बेकारी, मानवतावादी विचारधारा, धोखाधड़ी, मृत्युदर्शन, व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि, राष्ट्रीय भावना और प्रेमाभिव्यक्ति। कवि नीरज जी ने ग़ज़लों के द्वारा जो जागृति का कार्य किया है, वह काबिले तारिफ है।

संदर्भ सूची

1 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.128 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

2 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.132 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

3 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.140 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

4 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.127 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

5 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.132 - हिन्द पॉकेट बुक्स,दिल्ली - 1999

6 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.196,197 - हिन्द साहित्य भंडार,लखनऊ - मार्च 1979

7 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121- हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

8 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.143,144 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

9 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

10 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.126 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

11 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.127 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

12 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.135 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

13 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.133 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

14 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.137 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

15 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.137,138 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

16 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.169 - हिन्द साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979

17 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999

18 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.115 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996

19 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.121,122 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
20 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.189 - हिन्द साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
21 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.125 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
22 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.130 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
23 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.119,120 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
24 नीरज का काव्य : एक विश्लेषण - डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र - पृ.208 - हिन्द साहित्य भंडार, लखनऊ - मार्च 1979
25 नीरज की पाती - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.138 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1999
26 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.111,112 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996
27 कारवाँ गुजर गया - गोपालदास सक्सेना 'नीरज' - पृ.131 - हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली - 1996